शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

# गोरक्षा का वीभत्स पहलु

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

विगत दिनों उत्तरप्रदेश के दादरी में गोरक्षा का वीभत्स चेहरा सामने आया। गोरक्षा का प्रश्न हमेशा से अत्यंत संवेदनशील रहा है। आज इसे जिस ढंग से हल करने के प्रयास किए जा रहे हैं, उसने हमारे मनुष्य होने पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। दादरी में कुछ शरारती तत्वों ने मोहम्मद अखलाक के घर में गोमांस होने की अफवाह फेलायी। उसके घर के आसपास भीड़ एकत्र हो गयी। कुछ लोगों ने मिलकर मोहम्मद अखलाक को पीट-पीट कर मार डाला और उसके लड़के को गंभीर रूप से घायल कर दिया। हम आज भी उन्हीं प्रश्नों में उलझे हुए हैं जो कभी अठारहवीं सदी के प्रश्न हुआ करते थे। अंग्रेजों ने बहुत सोच-समझकर हिन्दू और मुसलमानों को आपस में लड़ाने के लिए गाय और सूअर का समय-समय पर इस्तेमाल किया और सैकड़ों लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। महात्मा गांधी को गोरक्षा पर यह कहना पड़ा था कि यह प्रश्न भारत की आजादी से भी कठिन है। राजनीतिक स्वार्थों के चलते संगठन और दलों ने गोरक्षा के प्रश्न को दो धर्मों के खिलाफ खड़ा कर दिया है। सोची समझी साजिश के तहत पिछले सौ सालों से यह दुष्प्रचार लगातार किया जा रहा है कि गोहत्या के लिए मुसलमान जिम्मेदार हैं। इसकी ओट में अनेक राजनीतिक स्वार्थ साधे जा रहे हैं। धर्म की दुकानें संचालित की जा रही हैं। संत विनोबा के पांच दिन के उपवास के बाद देश के चौदह राज्यों में गोहत्या पर प्रतिबंध लगाया गया। इसमें केरल और बंगाल छूट गए थे। इसके बाद पूर्ण गौवंश हत्याबंदी की मांग को लेकर विनोबा ने मुम्बई के देवनार कतलखाने के समक्ष दो मांगों को लेकर सत्याग्रह प्रारंभ करने का आदेश दिया : इस देश में किसी भी उम्र के गौवंश की कतल पर प्रतिबंध लगाने के लिए केंद्रीय कानून बनाया जाये, 2 इस देश से मांस निर्यात बंद हो। देवनार क़त्लखाने पर तैतीस सालों तक सत्याग्रह चलता रहा। इस बीच अनेक सरकारें आई-गयी। लेकिन कानून नहीं बना। विगत दिनों महाराष्ट्र सरकार ने गौवंश हत्याबंदी कानून बनाया, तब इस सत्याग्रह का समापन किया गया। एक तरह से इस सत्याग्रह ने गोरक्षा को राजनीति, सांप्रदायिकता और हिंसा से बचा रखा था। जब तक यह सत्याग्रह चलता रहा, देश में दादरी जैसी घटना दिखाई नहीं दी। लोकसभा चुनाव में प्रचार के दौरान नरेंद्र मोदी पिंक रिवोल्यूशन की चर्चा कर इसे केंद्र में लाए। उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद मांस निर्यात में पंद्रह प्रतिशत की वृद्धि हो गई। मांस निर्यात में भारत दूसरे नंबर पर आता है। पहले नंबर पर ब्राजील है। केंद्र में सरकार बदलने के बाद भी देश की नीतियों में कोई खास बदलाव नहीं हुआ है। गोहत्याबंदी को लेकर पहले की सरकारें पूर्ण बहुमत न होने का बहाना बनाती रही हैं। दादरी जैसी घटना को रोकने के लिए केंद्र सरकार को अविलंब गोहत्याबंदी के प्रश्न को समवर्ती सूची में लेकर पूरे देश में केंद्रीय कानून से गौवंश हत्याबंदी लागू करना चाहिए और इस देश से मांस निर्यात बंद हो। यह भारतीय संस्कृति का आदेश है, यह संविधान का निर्देश है, संसद को दिया हुआ वचन है।